बातचीत और अवलोकन

शलाका गायकवाड

पिछले साल *एकलव्य* व डाइट, पचमढ़ी ने साथ मिलकर 'राह बनाते शिक्षक' कार्यक्रम का आयोजन किया था। यह एक किस्म का संवाद था। शिक्षक अपनी कक्षाओं में जो नवाचार करते हैं, बच्चों के सीखने का जिस तरह से अवलोकन करते हैं, समुदाय को साथ लेकर जिस तरह अपनी चुनौतियों का सामना करते हैं, उन सब अनुभवों को शिक्षक 'राह बनाते शिक्षक' कार्यक्रम में साझा करते हैं। इससे ब्लॉक एवं ज़िले के शिक्षकों को अपने साथियों के नवाचारों की जानकारी मिलती है और साथ ही, खुद भी कुछ करने की प्रेरणा मिलती है।

इसी सन्दर्भ में पिछले साल आयोजित 'राह बनाते शिक्षक' कार्यक्रम में होशंगाबाद की शिक्षिका सुश्री एकता चौरे ने - वे शिक्षिका किस तरह बनीं, किन चुनौतियों का सामना किया - इस सबके बारे में विस्तार से बताया। एकता जी अपनी स्कूली पढ़ाई के दौरान ही आँखों की रोशनी चली जाने की वजह से एक नई चुनौती का सामना कर रही थीं। उनका शिक्षिका बनने का सफर वाकई तारीफ के काबिल है।

संदर्भ पत्रिका ने उनके अनुभव को प्रकाशित करने का तय किया, विशेष तौर पर इसलिए भी क्योंकि शिक्षिका बनना तो एक चुनौती है ही, लेकिन विज़ुअली चैलेंज्ड होते हुए प्राइमरी या मिडिल कक्षा के बच्चों को पढ़ा पाना, बहुत-सी अलग तरह की चुनौतियाँ प्रस्तुत करता होगा। हमने सोचा, बेहतर होगा कि हम एकता जी के साथ थोड़ी बातचीत करके इस चुनौती और उनके पढ़ाने के तरीकों को समझने और सबके सामने रखने की कोशिश करें।

इस सिलसिले में उनकी सहमति से कक्षा अवलोकन किया और फिर इस बारे में बातचीत हुई।

जब हम एकता जी से मिलने उनके स्कूल (शासकीय जनजातीय बालक आश्रम शाला, होशंगाबाद) गए, उस समय वे कक्षा सातवीं को इंग्लिश का पाठ पढ़ा रही थीं।

कक्षा अवलोकन

कक्षा में लगभग 15 बच्चे होंगे। बैठक व्यवस्था की बात करूँ तो सभी बैंच की व्यवस्था 'C' आकार की थी। सम्भव है, इससे एकता मैडम कक्षा के अन्दर बिना किसी डर के घूम-

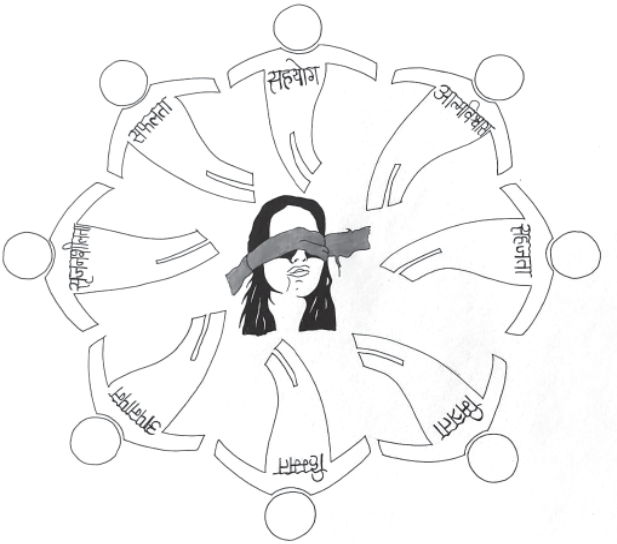

फिरकर कर पढ़ा पाती हों। 'The Wheat is Cheaper - II' पाठ चल रहा था। पाठ पढ़ाते समय मैडम एक-एक बच्चे को खड़ा करके उसकी कुछ पंक्तियाँ पढ़वा रही थीं। मैडम ने सभी बच्चों को पढ़ने का मौका दिया। बीच-बीच में जब बच्चों को कुछ शब्द पढ़ने में कठिनाई आ रही थी, तो मैडम उन्हें धीरे-धीरे उस शब्द को हिज्जे करके पढ़ने के लिए बोल रही थीं ताकि वे अक्षरों को सुनकर, उन्हें उस शब्द का उच्चारण सिखा सकें। उच्चारण के साथ-साथ वे बच्चों को कठिन शब्दों के अर्थ भी उदाहरण के साथ समझा रही थीं। जैसे, listen = सुनना, sore = छाला, poor = बेचारा, wonder = अचम्भित, kind = दयालु, owe = कर्ज़दार होना, wheat = गेंहू। कठिन शब्दों के साथ-साथ मैडम उस पूरे वाक्य को भी समझा रही थीं। जैसे - 'The horse has a sore on his back' मतलब घोड़े की पीठ पर घाव या छाला है। जैसे ही एक पैराग्राफ खत्म होता, मैडम बच्चों से कुछ सवाल पूछती हैं ताकि वे जान सकें कि बच्चे उस पैराग्राफ को कितना समझ पाए हैं। इस तरह कक्षा को पाठ पूरा समझाने के बाद पाठ के अन्त में दिए अभ्यास व शब्दावली तक पहुँच गईं।

पढ़ाने के दौरान मैडम ने श्यामपट्ट पर दिनांक, दिन और अध्याय का नाम भी लिखा था। श्यामपट्ट पर लिखने के लिए उन्होंने अपने दोनों हाथों से अनुमान लगाकर लिखा। मैडम को देखकर मुझे एक लोकोक्ति याद आई - 'अभ्यास मनुष्य

को पूर्ण बनाता है' जो एकता मैडम पर एकदम सही बैठती है। ऐसा इसलिए भी क्योंकि श्यामपट्ट पर लिखते समय मैडम के चेहरे पर कोई झिझक या डर मुझे नहीं दिखा। वे पूर्ण आत्मविश्वास के साथ लिख रही थीं ताकि वे बच्चों को पढ़ाने में कहीं कम न पड़ जाएँ। यह सब बातें मैं उनसे हुई चर्चा और अपने अवलोकन के आधार पर साझा कर रही हूँ।

समझने के लिए बातचीत

कक्षा सातवीं को इंग्लिश का पाठ पढ़ाने के बाद हमने एकता मैडम से बातचीत कर यह जानना चाहा कि वे कक्षा में पढ़ाए जाने वाले पाठ की तैयारी कैसे करती हैं।

मैडम ने बताया कि स्मार्टफोन आने के पहले वे पाठ को किसी से पढ़वाकर उसे समझ लेती थीं और उसकी तैयारी करती थीं। स्मार्टफोन आने से काफी सुविधा हुई है। भारत शासन की सुगम्य पुस्तकालय की वेबसाइट पर एनसीईआरटी की सभी कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकें ऑडियो फाइल की शक्ल में उपलब्ध हैं। इन्हें सुना जा सकता है। इस वेबसाइट पर और भी किताबें उपलब्ध हैं। इसके अलावा यूट्यूब व विविध वेबसाइट से भी काफी मदद मिल जाती है।

एकता मैडम ने बताया कि वे ज़्यादातर मौखिक रूप में पढ़ाती हैं। एक अध्याय के बाद जो भी अभ्यास होते हैं जैसे शब्दकोष, पढ़ें और सीखें, प्रश्न और उत्तर आदि, वे उन्हें बच्चों से मौखिक रूप में हल करवाती हैं और फिर उन्हें लिखने के लिए बोलती हैं। बच्चों को जहाँ भी मुश्किल आती है, वे उन्हें मौखिक रूप में मदद करती हैं।

एकता जी बताती हैं कि बच्चे विविध अभ्यास के सवालों के जवाब अपनी नोटबुक में लिखते हैं। बच्चों ने सही लिखा है या नहीं, यह जानने के लिए कक्षा के एक-दो बच्चों से जवाब पढ़कर सुनाने के लिए कहती हैं। फिर उनके जवाब ठीक करवा देती हैं। ऐसे ही कुछ और बच्चों के जवाब सुनकर, उन्हें ठीक करवाने के बाद इन बच्चों को ज़िम्मेदारी देती हैं कि कक्षा में बाकी बच्चों के जवाबों की जाँच करके उन्हें दुरुस्त करवाएँ। अन्त में एक बार फिर सुनिश्चित कर लेती हैं कि कक्षा में सभी बच्चों ने सवाल का सही जवाब कॉपी में लिखा है या नहीं। जहाँ कहीं भी दिक्कत महसूस होती है, बिना झिझक सह-शिक्षकों की मदद लेती हैं, और उनके साथी सदैव मदद के लिए तत्पर रहते हैं। बच्चे भी काफी सहयोगी भावना वाले हैं इसलिए कक्षा में अनुशासन बना रहता है, बच्चे नियत समय पर अपना काम करते हैं। किसी प्रकार की सख्ती दिखाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती।

एकता मैडम कुछ पीरियड प्राइमरी कक्षाओं में भी लेती हैं। इन कक्षाओं में

बच्चे खुद से सारे अभ्यास कर सकें, ऐसे हालात नहीं होते। बच्चों को कई मौकों पर शिक्षक की ज़रूरत होती है। हमने यह जानना चाहा कि प्राइमरी कक्षाओं के लिए वे किस तरह तैयारी करती हैं।

एकता मैडम ने बताया, "मानव शरीर की समस्त इन्द्रियों में से मेरी दृष्टि नहीं होने के कारण मैं कुछ चीज़ों की कल्पना कर बच्चों को पढ़ाने में खुद को अक्षम पाती हूँ। मैं बच्चों के लिए अमूर्त चीज़ों को मूर्त रूप में प्रस्तुत नहीं कर पाती और उसके पीछे की संकल्पना, विवरण और स्पष्टीकरण नहीं दे पाती। मैं इन सब मुद्दों को एक-दूसरे से जोड़कर काम करने के लिए खुद को चुनौतियों से घिरी हुई पाती हूँ।"

"प्राइमरी कक्षाओं के पाठ के ऑडियो सुनकर कुछ तैयारी तो हो जाती है। लेकिन विविध कविता, गीत, खेलगीत करके सबसे पहले बच्चों के साथ मित्रता साधनी होती है। एक बार बच्चों के साथ मित्रता हो जाए तो कक्षा में काम करना आसान हो जाता है। बच्चे भी मेरे साथ सहज हो जाते हैं। फिर पाठ पढ़ाते हुए टीएलएम का उपयोग करना भी सहज हो जाता है। मैंने कुछ शब्द-कार्ड और चित्र-शब्द कार्ड पर ब्रेल लिपि में कार्ड का नाम वगैरह लिख लिया है। इससे मेरे लिए कार्ड को बच्चों को दिखाना अथवा कार्ड पर लिखे शब्द या चित्र के साथ संगति बैठाना आसान हो जाता है।"

"प्राइमरी कक्षा में बच्चों के लिए ब्लैक बोर्ड का उपयोग भी ज़्यादा करना होता है। बच्चे शब्द समझ पाए हैं या सही लिख पा रहे हैं, यह जानने के लिए कई बार कुछ बच्चों

को अपने पास बुलाकर मेरी हथेली पर उँगली से लिखने के लिए कहती हूँ। इससे मुझे समझ आ जाता है कि बच्चा सही लिख पा रहा है या कहाँ गलती कर रहा है। मौखिक सवाल-जवाब करके भी बच्चे कहाँ तक समझ पाए हैं, कहाँ मदद की ज़रूरत है, यह एहसास बनता है।

"इसी तरह सह-शिक्षकों की मदद लेकर बच्चों की नोटबुक को भी चेक कर लेती हूँ।"

शालाओं में होने वाले नियमित आंकलन में भी एकता मैडम अपनी ओर से पूरी कोशिश करती हैं कि समय पर काम हो जाए। उन्होंने कम्प्यूटर एप्लिकेशन में पीजी डिप्लोमा की पढ़ाई की हुई है। वे शाला में रखे डेस्कटॉप आसानी-से चला लेती हैं। इसमें बनाई गईं आंकलन शीट्स में डाटा इनपुटिंग भी कर लेती हैं। इसी तरह कम्प्यूटर पर अंक-सूची और प्रोग्रेस रिपोर्ट में टिप्पणियाँ लिखना वगैरह भी आसानी-से कर लेती हैं।

बातचीत में एकता जी ने यह भी बताया कि सामान्य लोगों की तुलना में उन्हें कक्षा में गतिविधियों की तैयारी और उनके क्रियान्वयन के लिए अधिक समय लगता है। वे आगे कहती हैं, "ये तो रही कक्षा के अन्दर की बात, यदि मैं अन्य कार्यों की बात करूँ तो वहाँ भी मुझे अधिक समय लगता है। कभी-कभी मुझे अन्य साथियों की मदद लेने की ज़रूरत महसूस होती है।" मैडम आखिर में कहती हैं कि उन्होंने 'पराई आँखों से सफलता प्राप्त की है'। जीवन में परिवहन से लेकर बच्चों को पढ़ाने तक के लिए उन्हें मदद लेनी पड़ी है। इस बीच वे शारीरिक और मानसिक तनाव से गुज़री हैं लेकिन उन्होंने हिम्मत बिलकुल नहीं हारी और सबकी मदद से अपनी सफलता की ओर आगे बढ़ रही हैं।

एकता मैडम का कहना है, "इस शाला में अधीक्षक मैडम और सहकर्मी शिक्षकों का इतना सपोर्ट मिलता है कि मैं कभी भी अपने आप को अकेली महसूस नहीं करती। मैं सदैव सृजनशील बनी रहती हूँ। इसमें बड़ा योगदान मेरी शाला के बच्चों और सहकर्मी शिक्षकों का है।"

शलाका गायकवाड: *एकलव्य* के आश्रमशाला विज्ञान प्रोजेक्ट, महाराष्ट्र में काम करने के बाद अब होशंगाबाद ज़िले के बाबई ब्लॉक में भाषा, गणित, विज्ञान और डिजिटल माध्यम से सीखने-सिखाने की प्रक्रिया पर काम कर रही हैं। बच्चों के साथ वक्त बिताना और उनसे जुड़े अनुभव लिखना पसन्द है। चित्रकारी और फोटोग्राफी में दिलचस्पी।

सभी चित्र: शलाका गायकवाड।

यह लेख एकता मैडम से की गई बातचीत पर आधारित है।